INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (online)
ISSN 2348 - 9359 (Print)

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

www.IRJMSH.com
www.isarasolutions.com

Published by iSaRa Solutions

समकालीन हिंदी .मलायलम के लेखिकाओं की रचनाओं में पर्यावरण

Dr.Ranjith Madhavan

Assistant Professor
Dept. of Hindi
M E S ASMABI COLLEGE
P.VEMBALLUR

पर्यावरण 'शब्द 'परि' उपसर्ग के साथ आवरण शब्द के संयोग से बना है.'परि का अर्थ है ,चारों और ,इर्द- वातावरण,किसी व्यक्ति अथवा विषय की परिस्थिति .अर्थात हमारे चारों और के आवरण,वातावरण एवं जड़ -चेतन घटकों के सम्मिलित रूप का नाम ही पर्यावरण है. सजीव घटक में मनुष्य ,जीव ज्न्तु एव्म समस्त प्राणि जगत आता है.जड़ घटकों में क्षिति,जल,पावक,हवा,आदि शामिल है. अर्थात हमारे आसपास की हर वह वस्तु सजीव अथवा) (निर्जीव जिसका हम पर या हमारे रहनसहन पर या हमारे स्वास्थ्य पर एवं हमारे जीवन पर- प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष, निकट या दूर भविष्य में, कोई प्रभाव हो सकता है और साथ ही ऐसी हर वस्तु, जिस पर हमारे कारण कोई प्रभाव पड़ सकता है पर्यावरण है . सारी दुनिया में पर्यावरण एक ऐसा ज्वलन्त विषय है जिसको लेकर बुद्धिजीवी वर्ग अत्यन्त चिन्तित व आन्दोलित है. यदि पर्यावरण को सुरक्षित व नियंत्रित न किया गया तो मानव जाति सहित समस्त प्राणी जगत का भविष्य अनिश्चित, असुरक्षित, अन्धकारमय व विनाशकारी होकर उसके अस्तित्व को समाप्त भी कर सकता है।

प्रकृति के गोदी में पला मानव विज्ञान के सहारे पर्यवारणीय संसाधनों के दोहन में लिप्त है.सृष्टि के घातक और पोषक तत्वों के बीच का संतुलन इसलिए ही नष्ट हो रहे है.इस असंतुलन का मानव के जीवन पर भी असर पड़ चुके है.इस ज्वलंत समस्या की ओर मलयालम और हिंदी साहित्य के महिला रचनाकारों की प्रतिक्रिया के बारे में यहाँ जांच हो रहे है.कहानी एक ऐसी विधा है जिसमें अपार शक्ति और सामर्थ्य विद्यमान है .

मलयालम के विख्यात कहानीकार पी वत्सला जी प्रकृति और मानव के रिश्ते पर बल देनेवाली कहानीकार है,आपकी "इरियान्नियिले किनरुकल"(इरियान्नी के कुआं) नामक कहानी में बढ़ते शहरीकरण ,अनियंत्रित जल शोषण आदि के कारण हो रहे झंझटों पर प्रकाश डाला है .

नगरपालिका से सेवानिवृत कांचना का बेटा है अप्पाजी .अप्पाजी गणित शास्त्र में स्नातक है .नौकरी ढूंढते ढूंढते अंत में दूर इरियान्नी गाँव में बनानेवाले टाउनशिप में पहुँच जाता है.पगडंडियों और मृत झरनों की शमशान पारकर वह सैट पर पहुँच जाता है. टाउनशिप के निर्मातों द्वारा गांववालों को भगाने के लिए झरनों के उद्भव स्थानों पर रोक डालने का दृश्य उन्हें देखने को मिलता है .तरह तरह की मशीनों के सहारे गाँव को शहर बना रहे है .अप्पाजी भी उन मशीनों में एक बन जाता है .हर शाम वह अन्य कारीगरों के साथ नहाने जाता था .उस वक्त उसे एक लड़की दोस्त के रूप में मिल जाती है. उससे पता चलता है कि पहले झरनों ,तालाबों और कुओं से शहद जैसा मीठा पानी मिलता था . लेकिन अब पानी नाले से ही मिल रहा है .क्म्पनिवाले जल श्रोतों का नाश कर डाला है .वह लड़की और माँ भी गाँव छोड़ना चाहते है ,मगर माँ और गाँव का रिश्ता उतना दृढ़ है ,इसलिए वह जाने से माना कर रही है .अप्पाजी स्तब्ध रह जाता है .सालों से बने संस्कृति के नाश का हेतु वह भी है ,यह चिंता उसे पागल बनाता है .

यहाँ लेखिका गाँव और गांववालों के तन्मयता और तल्लीनता पर प्रकाश डाल रही है. शहर अपनी भू विस्तृति बढाते वक्त सामनेवाले गाँवों का नाश हो रहा है .वहां के पर्यावरण में हो रहे बदलाव ,ग्रामीणों की पीड़ा आदी विषयों पर ध्यान देता ही नहीं ,यही तथ्य लेखिका यहाँ दिखा रही है .

वी .के दीपा जी द्वारा लिखित ‘ओरु यात्रययप्पू ‘(एक विदाई) ,पर्यावरण से जुड़ कर जीने की अभिलाषा रखनेवाली सुधा लक्ष्मी की कहानी है . हर वक्त वातानुकूलित घर में जीने और कृत्रिम महक से वह ऊब चुकी है .खुली हवा और प्राकृतिक सुषमा उनको लुभाती रहती है .मगर उसे कुछ करने की अनुमती नहीं थी ,अपनी दबावे वह कागज़ में लिखती रहती है .यह पढनेवाले उसके पति और और बेटी उसको समझने में कामयाब नहीं होते घर से मिले कागज़ का टुकडा लेकर रामचन्द्र एक मनोवैज्ञानिक के पास जाता है ,उसमें लिखा था ,” कांच के बीच के इस कृत्रिम वातावरण ,ठंडापन और हरियाली से मैं ऊब चुकी हूँ .सूरज की किरणों से मेरे तन को गरमकर ,चांदनी से ठंडा कर मैं जीना चाहती हूँ .यहाँ सब बनाया गया है ,मुझे यहाँ से बचना है “ मनोवैज्ञानि उसे समझाता है कि उसे कोई कमी नहीं है ,उसे पर्यावरण के अनुसार जीने की इच्छा मात्र है ,ऐसा करने दो .

बाप और बेटी इससे सहमत नहीं थे .बाहर की विष लिप्त हवा से बचना ही उसका परम लक्ष्य था .घर के पीछे एक सुन्दर तालाब था .सुधा को थोड़ा बहुत तसल्ली यहीं से मिलती थी .बाप और बेटी वहां आउट हॉउस बनाना चाहते है और काम शुरू होता है .तालाब

निकालने की पहले की रात में सुधा को ऐसा लगता है ,तालाब उसे पुकार रही है .वह चुपचाप निकलकर उसमें तैरने लगी ,घंटों तक ....सुधा तालाब कों अंतिम विदायी दे रही थी . वातानुकूलित कमरा आज सभी का सपना बन चुका है .वातानुकूलान से पर्यावरण पर होनेवाले बदलाव कि और हम नासर अन्दाज कर रहे है .प्रकृति की गर्मी और ठंडा हम कृत्रिम रूप से बना नहीं पायेंगे .ऐसे कोशिशें मानव और पर्यावरण के रिश्तों पर खायी पैदा करेंगी .पर्यावरण पर हो रहे दबा का फल उसी मायने में मानव पर भी होगा ,यही लेखिका बता रही है

मलयालम भाषा के साहित्यकार पर्यावरण के प्रति जागरूक है ,यह इन दोनों कहानियों से हम समझ पायेंगे .जमीन से नाता तोड़ कर जीना मानव के बस की बात नहीं है ,यह सन्देश वे सामज में फैला रहे है . अब हम हिंदी साहित्य की ओर आयेंगे

जे जयश्री जी की "नेल्लूर के प्लास्टिक आदमी" नामक कहानी में जल शोषण के बारे में सूचना दे रहे है .प्लास्टिक आदमी जिसको लोग पुकारते है ,सत्तर साल की है .उनकी जवानी में वह नेल्लूर गाँव में आया था .उस समय तेनार नदी में स्फटिक सा सुंदर पानी था .धीरे धीरे तेनार के तट पर स्थित वह गाँव शहर बनने लगे .तेनार की पानी दूषित होने लगी .धीरे धीरे पेड़ पौधे गायब हुए .पगडंडियों की जगह राजपथ आये .नए नए दूकान आये .सब लोग अपने अपने जगह के कचरा तेनार में डालने लगे और अंत में तेनार नाम के वास्ते नदी बन गई .सालों बाद याकोव नामक एक पुराना किसान मच्छर बढ़ने के कारण ढूंढते ढूंढते तेनार तक पहूंछ गया .तेनार की हालत देख कर वह अस्त - प्रज्ञ रह गए .नया मीडिया और नए आविष्कारों के सहारे वह तेनार बचाव आन्दोलन शुरू करता है .शुरू में उन्हें बहुत कठिनाईयों का सामना करना पडा .ख़ास कर प्लास्टिक उपभोक्ताओं से .लेकिन अंत में वे भी मानने लगे और तेनार से सभी कचरा निक्कालकर फिर शुद्ध बनाए . और एक बार नेल्लूर को हरिताभ बनाने की कोशिश में वहां के नौ जवान भी शामिल होते है . याकोव और उनके साथ काम करने वाले लोगों के अथक परिश्रम का नतीजा यह है कि यह नदी एक बार फिर से निर्मल हो गई हैयहाँ पर्यावरण के प्रति उठ रहे नयी चेतना का वर्णन लेखिका ने किया है .

क्षमा शर्मा जी की " जमुना जी तक " नामक कहानी में बढ़ रहे शहरीकरण और उसके कारण गावों में होनेवाले सांस्कृतिक ,पारिवारिक क्षेत्रों में होनेवाले परिवर्तन पर्यावरण के माध्यम से चित्रित किया है .शहर से पांच साल पहले अपने एक जमुना नदी के किनारे पर स्थित अपनी चाची के यहाँ आने की स्मृति से कहानी शुरू होती है .पांच साल पहले जो गाँव वहां था ,वह बिलकुल नहीं रह गया है .पेड़ - पौधे,नदी सब बदल गए है.प्रकृति से जुड़ कर जीनेवाले लोग अब घर के चार दीवारों के अंदर दूरदर्शन के सामने बैठ कर जीने लगे है . जमुना

नदी तो कचरों से बाहरी हुयी है .किसी भी काम के लिए एक साथ आनेवाले अब अलग अलग हो चुके है .लेखिका को देख कर चाची खुश हो जाती है और वापसे जाते वक्त वह उनकी पैरों पर पड़ रही है .उसकी एक ही कामना थी ,

" मर जाऊं तो जा चोले ए जमनाजी तक पहुँचा दियो "

" हाँ ,चाची पर जमुना क्या अब वो जमुना है .गंदगी और कूड़े से भरी "

" नहीं ,बिटिया मोकूं तो वो जमना मईया है .मईया गंदी है जाये तो भूल जावतें

भारतीय धर्म और आस्था पर्यावरण पर केन्द्रितथा.उसे बदलना हमारे बस की बात नहीं है .

औद्यौगीकरण देश के विकास के लिए अति आवश्यक है लेकिन यही औद्योगीकरण बीमारियों की जड़ है और नदी प्रदूषण का मुख्य कारण भी है। देश की अधिकतर फैक्ट्रियों, उद्योगों का कचरा, रसायन सब का सब नदियों में प्रवाहित हो रहा है उसे रोकने का कोई उपाय नहीं है जहॉ हो भी सकता है वहॉ उद्योगपति अपने लाभ वृद्धि के लिए भ्रष्टाचार करके करना ही नहीं चाहते

हिंदी और मलयालम के महिला लेखिकाएं अपनी रचनाओं के ज़रिये यह दिखा रही है कि , पर्यावरण प्रदूषण मानव और जीवधारियों के लिए भंयकर चुनौती है-| मनुष्य अपने बुद्धि-और दूरदृष्टि से प्रगति के रथ चातुर्य को गतिशील बनाये हुए हैं | पर्यावरण की सुरक्षा व उसके खतरों का जब उल्लेख होता है तो उससे संबंधित सभी पहलुओ को देखना उचित है। रोग पता होने पर ही समाधान हो सकता है। समाधान तभी होगा जब हममें रोग को रोग कहने व उसका उपचार करने की दृढ़ इच्छा शक्ति होगी। कोई भी कार्य असम्भव नहीं होता। असम्भव वहीं होता है जहां इच्छा शक्ति कमजोर होती है। आज अनेक मनुष्य पर्यावरण का शत्रु बने हुये है। शत्रुता को छोड़कर सभी को प्रकृति को अपना मित्र बनाना चाहिये और उसके साथ मित्रता का व्यवहार करना चाहिये, इसी में सबकी भलाई है। मानव जाति के पोषण और विकास के लिए आवश्यकता इस बात की है कि पर्यावरण पर बढते संकट पर प्रत्येक नागरिक को गंभीरता से चिंतन करने व जागरूक हो अपने पूरे परिवार के साथ उसकी देखभाल करने के लिए आगे आयें .

डॉ.रंजित .एम् ,सहायक आचार्य , हिंदी विभाग एम्.इ.एस अस्माबी कोलेज पी वेम्बलूर पि.ओ ६८०६७१,केरल

सहायक ग्रन्थ

१.एंटे प्रिय कथकल -पि.वल्सला ,करंट बुक्स

२.ओरु यात्र अयप्पू -वि.के दीपा

३.नेल्लूर के प्लस्टिक आदमी -जयश्री

ISARA INSTITUTE OF MANAGEMENT & PROFESSIONAL STUDIES

RSEARCH GATEWAY

AROGYAM ONLINE

PARIVARTAN PSYCHOLOGY CENTER

भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एवं शोध

ISSN 2321 – 9726

WWW.BHARTIYASHODH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SCIENCE & TECHNOLOGY

ISSN – 2250 – 1959 (0) 2348 – 9367 (P)

WWW.IRJMST.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF COMMERCE, ARTS AND SCIENCE

ISSN 2319 – 9202

WWW.CASIRJ.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (0) 2348 - 9359 (P)

WWW.IRJMSH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SCIENCE ENGINEERING AND TECHNOLOGY

ISSN 2454-3195 (online)

WWW.RJSET.COM

INTEGRATED RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT, SCIENCE AND INNOVATION

ISSN 2582-5445

WWW.IRJMSI.COM

JOURNAL OF LEGAL STUDIES,POLITICS AND ECONOMICS RESEARCH

WWW.JLPER.COM